NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 25-05-2026

विषय सूची

अमेरिका-भारत रणनीतिक गठबंधन, वैश्विक प्रभाव: रूबियो

भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता पहल

भारत एक "1991 क्षण" का सामना कर रहा है: संरचनात्मक आर्थिक सुधारों की आवश्यकता

भारतीय रुपये पर दबाव और भारत के बाह्य क्षेत्र में उभरती चुनौतियाँ

संक्षिप्त समाचार

गूगल के 'इन्फ़ॉर्मेशन एजेंट्स'

भाव्या योजना

क्वाड (QUAD)

अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार

असम में जलकुंभी आजीविका पहल

संयुक्त राष्ट्र सैन्य लैंगिक प्रवक्ता पुरस्कार 2025

डॉलर–रुपया स्वैप ऑक्शन

अमेरिका-भारत रणनीतिक गठबंधन, वैश्विक प्रभाव: रूबियो

संदर्भ

- अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो अपने पहले आधिकारिक दौरे पर भारत पहुँचे।

परिचय

- अपने दौरे के प्रथम दो दिनों में उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री के साथ उच्च-स्तरीय वार्ताओं की श्रृंखला आयोजित की।
- वे नई दिल्ली में आयोजित होने वाली क्वाड विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लेने वाले हैं।
- उनका यह दौरा ऐसे समय में हो रहा है जब अमेरिका और भारत के संबंधों को लेकर गंभीर संभावनाएँ व्यक्त की जा रही थीं।
    - हालाँकि, अमेरिका ने यह स्पष्ट किया कि दोनों देशों के बीच संबंधों को "पुनर्स्थापित" करने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह पहले से ही एक सुदृढ़ साझेदारी है।

भारत-अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों का अवलोकन

- भारत की स्वतंत्रता के पश्चात से ही अमेरिका के साथ संबंध शीत युद्ध काल के अविश्वास और भारत के परमाणु कार्यक्रम को लेकर दूरी से गुज़रे हैं।
    - हाल के वर्षों में संबंध सुदृढ़ हुए हैं और आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्रों में सहयोग सुदृढ़ हुआ है।
- **द्विपक्षीय व्यापार:** नया लक्ष्य "मिशन 500" के अंतर्गत 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 500 अरब डॉलर तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।
- 2017-18 से 2022-23 के बीच दोनों देशों के बीच व्यापार में 72% की वृद्धि हुई है।
- अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, जिसके बाद चीन का स्थान है।
- **रक्षा और सुरक्षा:** भारत और अमेरिका ने गहन सैन्य सहयोग हेतु तीन "मूलभूत समझौते" किए हैं—2016 में लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ़ एग्रीमेंट (LEMOA), 2018 में प्रथम 2+2 वार्ता के बाद संचार संगतता और सुरक्षा समझौता (COMCASA), और 2020 में बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट (BECA)।
    - 2016 में अमेरिका ने भारत को "प्रमुख रक्षा साझेदार" का दर्जा दिया।
- **अंतरिक्ष:** भारत द्वारा हस्ताक्षरित आर्टेमिस समझौते ने मानवता के हित में अंतरिक्ष अन्वेषण के भविष्य के लिए साझा दृष्टिकोण स्थापित किया।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** भारत और अमेरिका संयुक्त राष्ट्र, G20, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन सहित विभिन्न बहुपक्षीय संगठनों में निकट सहयोग करते हैं।
    - ऑस्ट्रेलिया और जापान के साथ मिलकर अमेरिका एवं भारत क्वाड के रूप में एक राजनयिक नेटवर्क का संचालन करते हैं, जिसका उद्देश्य मुक्त एवं खुले इंडो-पैसिफिक को बढ़ावा देना है।
- **परमाणु सहयोग:** 2005 में नागरिक परमाणु समझौता हुआ, जिसके अंतर्गत भारत ने अपने नागरिक और सैन्य परमाणु प्रतिष्ठानों को अलग करने तथा नागरिक संसाधनों को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) के अधीन रखने पर सहमति दी।
    - बदले में अमेरिका ने भारत के साथ पूर्ण नागरिक परमाणु सहयोग की दिशा में कार्य करने का वचन दिया।
- **नई पहलें:** हाल ही में GE-HAL समझौते के अंतर्गत भारत में जेट इंजन निर्माण और "क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी पहल (iCET)" जैसी नई योजनाएँ घोषित की गई हैं, जो दोनों देशों के संबंधों में क्रांतिकारी बदलाव लाने का उद्देश्य रखती हैं।

चिंताएँ

- **व्यापार और आर्थिक विवाद:** शुल्क और बाज़ार पहुँच को लेकर मतभेद, विशेषकर कृषि, डेयरी उत्पाद, चिकित्सा उपकरण एवं डिजिटल सेवाओं में।
  - अमेरिका ने भारत की संरक्षणवादी नीतियों और उच्च आयात शुल्क की आलोचना की है।
- **भारत की सामरिक स्वायत्तता और रूस संबंध:** रूस के साथ भारत की दीर्घकालिक साझेदारी अमेरिका के लिए चिंता का विषय है।
- रूस से S-400 वायु रक्षा प्रणाली की खरीद ने अमेरिका के CAATSA (काउंटरिंग अमेरिका'स एडवर्सरीज़ थ्रू सैंक्शंस एक्ट) के अंतर्गत चिंताएँ उत्पन्न कीं।
- अमेरिका रूस के विरुद्ध अधिक सुदृढ़ दृष्टिकोण की अपेक्षा करता है, जबकि भारत सामरिक स्वायत्तता और बहु-संरेखण की नीति अपनाता है।
- **वैश्विक भू-राजनीतिक मुद्दों पर भिन्नता:** रूस-यूक्रेन युद्ध जैसे संघर्षों पर भारत ने प्रायः संतुलित या तटस्थ दृष्टिकोण अपनाया है।
- पश्चिम एशिया नीतियों, ईरान प्रतिबंधों और ऊर्जा सुरक्षा पर भी मतभेद उभरते हैं।
- भारत सामरिक स्वायत्तता को प्राथमिकता देता है, जबकि अमेरिका गठबंधन-आधारित संरेखण की अपेक्षा करता है।
- **आव्रजन और वीज़ा प्रतिबंध:** H-1B वीज़ा मानकों में सख़्ती भारतीय आईटी पेशेवरों को प्रभावित करती है।
- वीज़ा प्रक्रिया में देरी छात्रों, कामगारों और व्यवसायों पर प्रभाव डालती है।
- अमेरिकी आव्रजन नीतियों की अनिश्चितता भारतीय प्रवासी समुदाय और प्रौद्योगिकी क्षेत्र के लिए चिंता का कारण है।
- **रक्षा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की सीमाएँ:** उन्नत सैन्य तकनीकों के हस्तांतरण पर प्रतिबंध।
  - भारत में दीर्घकालिक रक्षा आपूर्ति की विश्वसनीयता को लेकर चिंताएँ।
- **पाकिस्तान और क्षेत्रीय सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** यद्यपि अमेरिका-पाकिस्तान संबंध शीत युद्ध काल की तुलना में कमजोर हुए हैं, भारत अब भी पाकिस्तान को अमेरिकी सैन्य सहायता को लेकर सतर्क रहता है।
- **अमेरिकी विदेश नीति की अनिश्चितता:** व्यापार नीतियों में बदलाव, अंतर्राष्ट्रीय समझौतों से हटना और प्रतिबंधों से संबंधित दबाव भारत के लिए अनिश्चितता उत्पन्न करते हैं।

निष्कर्ष

- भारत-अमेरिका संबंधों में सुदृढ़ सामंजस्य और स्थायी मतभेद दोनों विद्यमान हैं।
- रक्षा, प्रौद्योगिकी, व्यापार और इंडो-पैसिफिक सहयोग में साझेदारी गहराई तक पहुँची है, परंतु चुनौतियाँ सामरिक प्राथमिकताओं, आर्थिक हितों एवं भू-राजनीतिक दृष्टिकोणों में अंतर से जुड़ी हुई हैं।
- इन मतभेदों का प्रभावी प्रबंधन सतत संवाद, संस्थागत सहयोग और सामरिक चिंताओं के प्रति परस्पर सम्मान के माध्यम से ही संभव है।
- यह दीर्घकालिक स्थिरता और द्विपक्षीय संबंधों की प्रगति सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक होगा।

Source: TH

भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता पहल

संदर्भ

- भारत के रक्षा मंत्री ने महाराष्ट्र के शिरडी में नाइबे समूह के रक्षा विनिर्माण परिसर के उद्घाटन के दौरान यह बल दिया कि जो राष्ट्र अपने हथियार स्वयं निर्मित करने में सक्षम होते हैं, वे अपना भाग्य स्वयं निर्धारित करते हैं।

कार्यक्रम के बारे में

- **रक्षा विनिर्माण परिसर:** इस सुविधा में उन्नत तोपखाना प्रणाली, मिसाइल एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, रॉकेट प्रणाली, ऊर्जा सामग्री और स्वायत्त रक्षा प्लेटफ़ॉर्म का निर्माण किया जाएगा।

- **सूर्यास्त्र रॉकेट प्रणाली:** भारत की प्रथम 300-किमी यूनिवर्सल रॉकेट लॉन्चिंग प्रणाली "सूर्यास्त्र" का शुभारंभ इस कार्यक्रम में किया गया।
  - इस प्रणाली से संबंधित एक समर्पित मिसाइल परिसर की आधारशिला भी रखी गई।
- **स्वदेशी प्रौद्योगिकियाँ प्रस्तुत:** स्वदेशी टीएनटी संयंत्र प्रौद्योगिकी का अनावरण किया गया।
  - स्वदेशी आरडीएक्स संयंत्र प्रौद्योगिकी भी प्रस्तुत की गई।
  - नवीकरणीय जैव-ऊर्जा संपीड़ित बायोगैस संयंत्र का उद्घाटन किया गया।
  - नाइबे समूह और ब्लैक स्काई के बीच उपग्रह असेंबली सहयोग हेतु समझौता ज्ञापन (MoU) का आदान-प्रदान हुआ।

भारत में रक्षा उत्पादन

- **क्षेत्रीय योगदान:** वित्त वर्ष 2024-25 में रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों (DPSUs) ने कुल रक्षा उत्पादन में 57.50% योगदान दिया, जबकि भारतीय आयुध कारखानों ने 14.49% और गैर-रक्षा सार्वजनिक उपक्रमों ने 5.4% योगदान दिया।
- **रक्षा बजट वृद्धि:** 2013-14 में ₹2.53 लाख करोड़ से बढ़कर 2025-26 में ₹6.81 लाख करोड़ हो गया।
- **उत्पादन उपलब्धि:** 2024-25 में भारत ने अब तक का सर्वाधिक ₹1.50 लाख करोड़ का रक्षा उत्पादन प्राप्त किया, जो 2014-15 के ₹46,429 करोड़ से तीन गुना अधिक है।
- **स्वदेशी उत्पादन में वृद्धि:** अब 65% रक्षा उपकरण घरेलू स्तर पर निर्मित होते हैं, जबकि पहले 65-70% आयात पर निर्भरता थी।
  - **लक्ष्य:** भारत 2029 तक ₹3 लाख करोड़ रक्षा उत्पादन का लक्ष्य रखता है, जिससे वह वैश्विक रक्षा विनिर्माण केंद्र के रूप में अपनी स्थिति को सुदृढ़ करेगा।

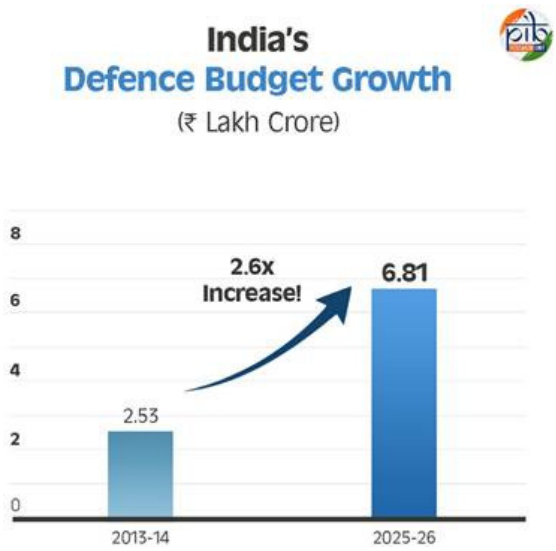

रक्षा आत्मनिर्भरता का महत्व

- **सामरिक स्वायत्तता:** विदेशी शक्तियों पर निर्भरता समाप्त कर राष्ट्र की संप्रभु विदेश नीति और स्वतंत्र कार्रवाई सुनिश्चित करता है।
- **संचालन सुरक्षा:** विदेशी नियंत्रित तकनीक (जैसे GPS या सॉफ़्टवेयर) पर निर्भरता समाप्त कर संवेदनशील सैन्य ढाँचे और कमांड प्रणाली की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।
- **अनुकूलित रक्षा:** सैन्य बलों को अपनी भौगोलिक परिस्थितियों, सामरिक खतरों एवं युद्ध सिद्धांतों के अनुरूप प्लेटफ़ॉर्म (जैसे तोपखाना और मिसाइल) तैयार करने की सुविधा देता है।
- **आर्थिक विकास:** घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देता है, आयात बिल कम करता है, उच्च-प्रौद्योगिकी रोजगार उत्पन्न करता है और भविष्य में रक्षा निर्यात से राजस्व अर्जित करता है।

रक्षा विनिर्माण को प्रोत्साहन देने हेतु सरकारी उपाय

- **रक्षा औद्योगिक गलियारे एवं स्वदेशी उत्पादन:** तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में दो रक्षा औद्योगिक गलियारे स्थापित किए गए हैं।
- **सरकारी योजनाएँ:** iDEX (रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार) और DTIS (रक्षा परीक्षण अवसंरचना योजना) रक्षा एवं एयरोस्पेस क्षेत्र में नवाचार को सक्षम बनाती हैं।

- **सृजन पहल:** 2020 में रक्षा उत्पादन विभाग (DDP) द्वारा आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने हेतु शुरू की गई।
- **ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस (EoDB):**
  - 2019 में रक्षा उत्पाद सूची को सरल बनाया गया।
  - रक्षा लाइसेंस की वैधता तीन वर्ष से बढ़ाकर 15 वर्ष कर दी गई, जिसे आगे 18 वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है।
- **रक्षा अधिग्रहण प्रक्रिया (DAP) 2020:** स्वदेशी डिज़ाइन, विकास और विनिर्माण को बढ़ावा देती है तथा "मेक इन इंडिया" श्रेणियों को प्राथमिकता देती है।

चुनौतियाँ

- कई उन्नत रक्षा प्रौद्योगिकियों और महत्वपूर्ण घटकों के लिए भारत अब भी आयात पर निर्भर है।
- रक्षा क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास व्यय अपेक्षाकृत सीमित है।
- जेट इंजन, सेमीकंडक्टर, साइबर युद्ध और उन्नत सेंसर जैसे क्षेत्रों में तकनीकी अंतराल उपस्थित हैं।
- निजी क्षेत्र की भागीदारी अब भी नियामक और खरीद संबंधी चुनौतियों का सामना करती है।
- रक्षा निर्यात में वैश्विक प्रतिस्पर्धा प्राप्त करने हेतु सतत निवेश और गुणवत्ता आश्वासन तंत्र आवश्यक है।

आगे की राह

- भारत को उभरती रक्षा प्रौद्योगिकियों में स्वदेशी अनुसंधान एवं विकास क्षमताओं को सुदृढ़ करना चाहिए।
- DRDO, निजी उद्योगों, स्टार्टअप्स और शैक्षणिक संस्थानों के बीच अधिक सहयोग आवश्यक है।
- रक्षा औद्योगिक गलियारों और विनिर्माण क्लस्टरों का और विस्तार किया जाना चाहिए।
- उभरती रक्षा प्रौद्योगिकियों के लिए विशेष कौशल विकास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए।

Source: TH

भारत एक "1991 क्षण" का सामना कर रहा है: संरचनात्मक आर्थिक सुधारों की आवश्यकता

संदर्भ

- वैश्विक ऊर्जा कीमतों में वृद्धि, भारतीय रुपये पर दबाव, बढ़ते राजकोषीय घाटे, सब्सिडी का भार और धीमी आर्थिक वृद्धि ने 1991 में किए गए आर्थिक सुधारों जैसे संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता पर परिचर्चा को पुनर्जीवित कर दिया है।

भारत आर्थिक दबाव का सामना क्यों कर रहा है?

- **वैश्विक ऊर्जा कीमतों में वृद्धि:** मध्य पूर्व में जारी संकट ने वैश्विक कच्चे तेल और उर्वरक कीमतों को उल्लेखनीय रूप से बढ़ा दिया है।
  - उच्च आयात लागत भारत के व्यापार संतुलन और चालू खाते के घाटे पर दबाव डाल रही है।
  - ऊर्जा कीमतों में वृद्धि परिवहन और उत्पादन लागत को भी बढ़ा रही है।
- **भारतीय रुपये का अवमूल्यन:** अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपया लगातार गिर रहा है और लगभग ₹96.9–97 के रिकॉर्ड निम्न स्तर पर पहुँच गया है।
  - कमजोर रुपया कच्चे तेल, उर्वरक और अन्य आवश्यक वस्तुओं के आयात की लागत बढ़ा देता है।
- **निवेश भावना में गिरावट:** वैश्विक अनिश्चितता और जोखिम से बचाव के कारण विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (FPIs) निवेश वापस ले रहे हैं।
  - घरेलू निवेशक भी मुद्रास्फीति दबाव और धीमी आर्थिक वृद्धि के कारण सतर्कता बरत रहे हैं।
- **मुद्रास्फीति का दबाव:** ईंधन, उर्वरक और खाद्य कीमतों में वृद्धि से अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ रहा है।
  - यदि मुद्रास्फीति भारतीय रिज़र्व बैंक की सहनशीलता सीमा से ऊपर जाती है, तो RBI को रेपो दर बढ़ानी पड़ सकती है, जिससे व्यवसायों और उपभोक्ताओं के लिए उधारी लागत बढ़ेगी तथा आर्थिक वृद्धि धीमी होगी।

- **जलवायु संबंधी चिंताएँ:** प्रबल एल नीनो की आशंका ने कम वर्षा और कृषि उत्पादकता में गिरावट की चिंता बढ़ा दी है।
  - कमजोर कृषि उत्पादन ग्रामीण आय को कम कर सकता है और खाद्य मुद्रास्फीति बढ़ा सकता है।

सब्सिडी क्यों बड़ी चिंता बन रही है?

- **उर्वरक सब्सिडी का भार:** भारत अपनी यूरिया आवश्यकता का लगभग एक-चौथाई हिस्सा वैश्विक बाज़ार से आयात करता है।
  - आयातित यूरिया किसानों को अत्यधिक सब्सिडी पर बेचा जाता है, जिससे भारी राजकोषीय भार उत्पन्न होता है।
  - अत्यधिक सब्सिडी से यूरिया का दुरुपयोग और कालाबाज़ारी को बढ़ावा मिलता है।
  - असंतुलित उर्वरक उपयोग मृदा के स्वास्थ्य और कृषि स्थिरता को प्रभावित करता है।
- **खाद्य सब्सिडी का भार:** सरकार 800 मिलियन से अधिक लोगों को मुफ्त या अत्यधिक सब्सिडी वाला खाद्यान्न प्रदान करती है।
  - बड़े पैमाने पर खाद्य सब्सिडी व्यय सरकार की पूंजी निवेश और अवसंरचना विकास की क्षमता को सीमित करता है।

आवश्यक आर्थिक सुधार

- **उर्वरक सब्सिडी सुधार:** सरकार यूरिया सब्सिडी को सीधे किसानों तक पहुँचाने के लिए डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (DBT) प्रणाली अपना सकती है।
  - सब्सिडी को भूमि स्वामित्व आकार से जोड़ा जा सकता है और PM-किसान डेटाबेस से एकीकृत किया जा सकता है।
  - यूरिया को पोषक तत्व-आधारित सब्सिडी (NBS) योजना में शामिल किया जा सकता है।
- **खाद्य सब्सिडी सुधार:** सरकार खाद्य सुरक्षा योजनाओं के लाभार्थियों की संख्या को तर्कसंगत बना सकती है।
  - सब्सिडी लाभों को वास्तविक रूप से कमजोर वर्गों तक लक्षित किया जा सकता है।
- **राजकोषीय समेकन उपाय:** सब्सिडी का तर्कसंगतीकरण राजकोषीय घाटे को कम कर सकता है और व्यापक आर्थिक स्थिरता में सुधार कर सकता है।
  - सब्सिडी सुधारों से हुई बचत को अवसंरचना, स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार सृजन में पुनर्निर्देशित किया जा सकता है।

चुनौतियाँ

- **राजनीतिक प्रतिरोध:** सब्सिडी और कल्याणकारी योजनाएँ राजनीतिक रूप से संवेदनशील मुद्दे हैं।
- **सामाजिक चिंताएँ:** अचानक सब्सिडी में कटौती गरीब और सीमांत परिवारों के लिए कठिनाई बढ़ा सकती है।
- **प्रशासनिक चुनौतियाँ:** DBT आधारित सुधारों के लिए सटीक भूमि अभिलेख और विश्वसनीय लाभार्थी डेटाबेस आवश्यक हैं।
- **किरायेदार किसान:** यदि सुधार सावधानीपूर्वक डिज़ाइन न किए जाएँ तो किरायेदार और अनौपचारिक कृषक बाहर हो सकते हैं।

निष्कर्ष

- भारत की वर्तमान आर्थिक चुनौतियाँ कल्याणकारी उद्देश्यों और राजकोषीय स्थिरता के बीच संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।
- सब्सिडी, राजकोषीय प्रबंधन और संसाधन आवंटन में संरचनात्मक सुधार आर्थिक लचीलापन बढ़ा सकते हैं तथा निवेशकों का विश्वास बहाल कर सकते हैं।
- हालाँकि, सुधारों को सावधानीपूर्वक लागू करना आवश्यक है ताकि कमजोर वर्गों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके और दीर्घकालिक स्थिरता बनी रहे।

1991 आर्थिक सुधार

- **पृष्ठभूमि:** 1991 में भारत गंभीर भुगतान संतुलन संकट का सामना कर रहा था और विदेशी मुद्रा भंडार केवल कुछ सप्ताह के आयात के लिए पर्याप्त था।
  - उच्च राजकोषीय घाटा, बढ़ती मुद्रास्फीति और बाहरी ऋण ने अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया था। भारत को आपातकालीन ऋण प्राप्त करने के लिए स्वर्ण भंडार गिरवी रखना पड़ा।

- **मुख्य सुधार:**
  - **उदारीकरण:** अधिकांश क्षेत्रों के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग समाप्त कर दी गई।
  - **निजीकरण:** सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों में विनिवेश और निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा दिया गया।
  - **वैश्वीकरण:** आयात प्रतिबंधों को कम किया गया और विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया गया।
- **परिणाम:** भारत ने आगामी दशकों में उच्च आर्थिक वृद्धि प्राप्त की।
  - विदेशी मुद्रा भंडार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
  - निजी क्षेत्र आर्थिक वृद्धि का प्रमुख चालक बनकर उभरा।

Source: IE

भारतीय रुपये पर दबाव और भारत के बाह्य क्षेत्र में उभरती चुनौतियाँ

संदर्भ

- भारतीय रुपये के हालिया अवमूल्यन ने एक बार पुनः भारत के बाह्य क्षेत्र की संरचनात्मक कमजोरियों को उजागर किया है।

परिचय

- यह स्थिति भारत के भुगतान संतुलन (BoP), आयातित ऊर्जा पर निर्भरता, बढ़ते व्यापार घाटे और वैश्विक भू-राजनीतिक अस्थिरता से जुड़ी गहरी चिंताओं को दर्शाती है।
- स्थिति विशेष रूप से गंभीर तब हो जाती है जब पश्चिम एशिया में तनाव होर्मुज़ जलडमरूमध्य को प्रभावित करता है।

भुगतान संतुलन (Balance of Payments) क्या है?

- भुगतान संतुलन (BoP) किसी देश और विश्व के बीच एक निश्चित अवधि में होने वाले सभी आर्थिक लेन-देन का व्यापक अभिलेख है।
  - **चालू खाता :** इसमें वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार, प्रेषण एवं आय प्रवाह शामिल होते हैं। भारत सामान्यतः चालू खाते में घाटा दर्ज करता है क्योंकि आयात निर्यात से अधिक होते हैं।
  - **पूँजी खाता :** इसमें प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI), विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI), बाहरी ऋण और बैंकिंग पूँजी शामिल होती है।
    - भारत अपने चालू खाते के घाटे को वित्तपोषित करने के लिए पूँजी प्रवाह पर अत्यधिक निर्भर है।

रुपया में गिरावट के कारण

- **कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि:** भारत अपनी कच्चे तेल की आवश्यकता का लगभग 85–90% आयात करता है।
  - तेल आयात अमेरिकी डॉलर में भुगतान किए जाते हैं, अतः वैश्विक कीमतें बढ़ने पर डॉलर की माँग बढ़ जाती है।
  - परिणामस्वरूप:
    - आयात बिल तेज़ी से बढ़ता है।
    - डॉलर की माँग बढ़ती है।
    - रुपया डॉलर के मुकाबले कमजोर होता है।
  - महँगे ईंधन आयात से मुद्रास्फीति बढ़ती है।
    - इस प्रकार तेल कीमतों का झटका सीधे विनिमय दर अस्थिरता में बदल जाता है।
- **होर्मुज़ जलडमरूमध्य पर निर्भरता:** यह विश्व का सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा मार्ग है जो फारस की खाड़ी को वैश्विक बाज़ारों से जोड़ता है।
  - भारत के कच्चे तेल और एलएनजी आयात का बड़ा हिस्सा इसी मार्ग से आता है।
  - इससे भारत का व्यापार घाटा और बढ़ जाता है तथा रुपये पर दबाव पड़ता है।

भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- **चालू खाते का घाटा (CAD) बढ़ना:** आयात बिल में वृद्धि और निर्यात में समान वृद्धि न होने से चालू खाते का घाटा बढ़ता है।

- बढ़ता CAD विदेशी पूँजी पर अधिक निर्भरता, बाहरी आघातों के प्रति बढ़ी हुई संवेदनशीलता और निवेशकों के विश्वास में कमी को दर्शाता है।
- यदि पूँजी प्रवाह एक साथ धीमा हो जाए, तो रुपये पर गंभीर अवमूल्यन का दबाव पड़ता है।

- **आयातित मुद्रास्फीति:** कमजोर रुपया आयात को महँगा बना देता है। इससे आयातित मुद्रास्फीति उत्पन्न होती है, विशेषकर ईंधन, उर्वरक और रसोई गैस में।
  - उच्च ईंधन कीमतें परिवहन और उत्पादन लागत को सभी क्षेत्रों में बढ़ा देती हैं, जिससे उपभोक्ताओं एवं उद्योगों दोनों पर प्रभाव पड़ता है।
- **विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव:** अत्यधिक अस्थिरता को रोकने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) प्रायः अपने विदेशी मुद्रा भंडार से डॉलर बेचकर हस्तक्षेप करता है।
  - लगातार हस्तक्षेप विदेशी मुद्रा भंडार को कम कर सकता है, नीतिगत लचीलापन सीमित कर सकता है और बाह्य क्षेत्र की स्थिरता को लेकर चिंताएँ बढ़ा सकता है।
  - यद्यपि भारत के पास कई विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में सुदृढ़ भंडार हैं, फिर भी लंबे समय तक बाहरी आघात कमजोरियाँ उत्पन्न कर सकते हैं।
- **अस्थिर पूँजी प्रवाह का जोखिम:** भारत अपने बाह्य घाटे का एक हिस्सा विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPIs) से वित्तपोषित करता है।
  - वैश्विक अनिश्चितता के दौरान निवेशक प्रायः उभरते बाज़ारों से पूँजी निकाल लेते हैं, डॉलर की माँग बढ़ती है और मुद्रा का अवमूल्यन तेज़ हो जाता है।
  - इससे वित्तीय बाज़ारों में अस्थिरता बढ़ जाती है।

भारत के बाह्य क्षेत्र को मज़बूत करने के उपाय

- **ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण:** खाड़ी तेल पर अत्यधिक निर्भरता कम कर अन्य देशों से आयात बढ़ाना।
- **रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार का विस्तार:** अस्थायी वैश्विक आपूर्ति व्यवधानों से निपटने के लिए तेल और गैस भंडार बढ़ाना।
- **नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण को तटवर करना:** सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी में निवेश बढ़ाना।
- **निर्यात प्रतिस्पर्धा को सुदृढ़ करना:** विनिर्माण दक्षता, लॉजिस्टिक्स, आपूर्ति श्रृंखला और तकनीकी क्षमता में सुधार करना।
- **स्थिर पूँजी प्रवाह को प्रोत्साहित करना:** दीर्घकालिक FDI, घरेलू विनिर्माण और अवसंरचना निवेश को प्राथमिकता देना।

निष्कर्ष

- भारतीय रुपये पर दबाव अस्थायी वित्तीय व्यवधान नहीं, बल्कि भारत के बाह्य क्षेत्र की गंभीर संरचनात्मक चुनौतियों को दर्शाता है।
- यद्यपि भारत के पास बड़े विदेशी मुद्रा भंडार और बढ़ती अर्थव्यवस्था जैसी सुदृढ़ता है, दीर्घकालिक स्थिरता के लिए ऊर्जा विविधीकरण, निर्यात प्रतिस्पर्धा, विनिर्माण और बाहरी निर्भरता में कमी जैसे संरचनात्मक सुधार आवश्यक हैं।
- इन बुनियादों को सुदृढ़ करना व्यापक आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने और अनिश्चित वैश्विक वातावरण में भारत की विकास यात्रा को सुरक्षित रखने के लिए अनिवार्य होगा।

Source: IE

संक्षिप्त समाचार

गूगल के 'इन्फ़ॉर्मेशन एजेंट्स'

संदर्भ

- गूगल ने हाल ही में सर्च में "इन्फ़ॉर्मेशन एजेंट्स" को एकीकृत किया है जो उपयोगकर्ताओं की ओर से वेब पर निरंतर निगरानी कर सकते हैं।

इन्फ़ॉर्मेशन एजेंट्स क्या हैं?

- इन्फ़ॉर्मेशन एजेंट्स एआई-संचालित प्रणालियाँ हैं जो उपयोगकर्ता की प्राथमिकताओं और निर्देशों के आधार पर ऑनलाइन जानकारी का निरंतर ट्रैक रखती हैं।
- ये एजेंट्स आवास सूची, यात्रा अपडेट, शेयर बाज़ार कीमतें, शॉपिंग डील्स या अन्य व्यक्तिगत प्रश्नों की निगरानी कर सकते हैं।
- ये एजेंट्स पृष्ठभूमि में सक्रिय रहते हैं और स्वतः अपडेट प्राप्त करते हैं।

इन्फ़ॉर्मेशन एजेंट्स की कार्यप्रणाली

- उपयोगकर्ता एआई प्रणाली को अपनी विस्तृत व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ और आवश्यकताएँ प्रदान करते हैं।
- एजेंट वेबसाइटों और डेटाबेस को लगातार स्कैन करता है।
  - यह ईमेल, कैलेंडर, मानचित्र, ब्राउज़िंग इतिहास और सर्च व्यवहार जैसे कई डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म से डेटा एकीकृत करता है।
- प्रणाली एकत्रित जानकारी को अनुकूलित सिफ़ारिशों या अलर्ट में परिवर्तित करती है।

मुख्य चिंताएँ

- इन्फ़ॉर्मेशन एजेंट्स को व्यापक व्यक्तिगत डेटा की आवश्यकता होती है, जिससे गोपनीयता, निगरानी और लक्षित विज्ञापन को लेकर चिंताएँ बढ़ती हैं।
- निरंतर एआई-आधारित वेब क्रॉलिंग इंटरनेट ट्रैफ़िक बढ़ा सकती है और प्रकाशकों पर अतिरिक्त लागत का भार डाल सकती है।
- एआई-जनित सारांश वेबसाइट विज़िट को कम कर सकते हैं और डिजिटल प्रकाशकों व सामग्री निर्माताओं के राजस्व मॉडल को कमजोर कर सकते हैं।

स्रोत: TH

भाव्या योजना

संदर्भ

- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) ने भाव्या योजना के कार्यान्वयन हेतु परिचालन दिशानिर्देश जारी किए हैं।

भाव्या योजना के बारे में

- भाव्या एक केंद्रीय क्षेत्र योजना है जिसका उद्देश्य भारत में निवेश-तैयार, विश्वस्तरीय औद्योगिक पार्क विकसित करना है।
- यह 'मेक इन इंडिया', 'पीएम गति शक्ति' और भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धी विनिर्माण गंतव्य बनाने की व्यापक दृष्टि से जुड़ी है।
- **मुख्य विशेषताएँ:**
  - कुल वित्तीय प्रावधान लगभग ₹33,660 करोड़।
  - 2026-27 से 2031-32 के बीच 100 औद्योगिक पार्कों का विकास।
  - प्रथम चरण में 50 औद्योगिक पार्कों का चयन प्रतिस्पर्धी प्रक्रिया से किया जाएगा।
  - 100 से 1,000 एकड़ तक के औद्योगिक पार्क विकसित किए जाएँगे।
- **कार्यान्वयन तंत्र:**
  - परियोजनाएँ कंपनियों अधिनियम, 2013 के अंतर्गत गठित विशेष प्रयोजन वाहन (SPVs) के माध्यम से लागू होंगी।
  - राष्ट्रीय औद्योगिक कॉरिडोर विकास निगम को परियोजना प्रबंधन एजेंसी (PMA) नामित किया गया है।

स्रोत: PIB

क्वाड (QUAD)

संदर्भ

- क्वाड विदेश मंत्रियों की बैठक से पहले जापान के विदेश मंत्री ने कहा कि महत्वपूर्ण खनिज सहयोग शीर्ष एजेंडा में है और भारत में बेहतर अवसंरचना तथा बौद्धिक संपदा अधिकारों की सुरक्षा की आवश्यकता है।

क्वाड सुरक्षा संवाद (QUAD)

- यह भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान का एक अनौपचारिक बहुपक्षीय समूह है जिसका उद्देश्य मुक्त और खुले इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सहयोग करना है।
- **गठन :** 2004 की हिंद महासागर सुनामी के बाद चारों देशों ने मानवीय और आपदा सहायता प्रदान करने हेतु साझेदारी की।

- इसे 2007 में जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने औपचारिक रूप दिया, लेकिन बाद में यह निष्क्रिय हो गया।
- 2017 में इसे पुनर्जीवित किया गया, जो चीन के बढ़ते प्रभाव के प्रति क्षेत्रीय दृष्टिकोण में बदलाव को दर्शाता है।

रणनीतिक महत्व

- **एक्ट ईस्ट नीति:** भारत की भागीदारी पूर्वी एशियाई देशों के साथ गहरे जुड़ाव और समुद्री सुरक्षा सहयोग को सुदृढ़ करती है।
- **सैन्य सहयोग:** यह सैन्य सहयोग, खुफ़िया जानकारी साझा करने और संयुक्त अभ्यासों का मंच प्रदान करता है।
- **चीन के प्रभाव का संतुलन:** क्वाड भारत के लिए समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय जल में नौवहन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण है।
- भारत ने नियम-आधारित बहुध्रुवीय विश्व का समर्थन किया है और क्वाड इसे क्षेत्रीय महाशक्ति बनने की महत्वाकांक्षा में सहायता कर सकता है।

स्रोत: TH

अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार

संदर्भ

- अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार ने 2026 में अपने वर्तमान स्वरूप में एक दशक पूरा किया।

परिचय

- यह पुरस्कार प्रतिवर्ष उस कथा साहित्य (उपन्यास या लघु कथा संग्रह) को दिया जाता है जो मूल रूप से अंग्रेज़ी के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में लिखा गया हो, फिर अंग्रेज़ी में अनूदित होकर यू.के. और/या आयरलैंड में प्रकाशित हुआ हो।
- **पुरस्कार राशि:** यह अनुवादकों के महत्वपूर्ण कार्य को मान्यता देता है। £50,000 की राशि लेखक और अनुवादक के बीच समान रूप से बाँटी जाती है।
- **पुरस्कार का विकास:** यह पुरस्कार 2005 में "मैन बुकर इंटरनेशनल प्राइज" के रूप में शुरू हुआ था। प्रारंभ में यह द्विवार्षिक पुरस्कार था जो लेखकों को उनके जीवनभर के कार्य के लिए दिया जाता था।
  - 2016 में इसे परिवर्तित कर प्रतिवर्ष एकल अनूदित कथा साहित्यिक कृति के लिए प्रदान किया जाने लगा।

पुरस्कार प्राप्तकर्ता

- 2026 में यांग शुआंग-ज़ि की ताइवान यात्रा-वृत्तांत, जिसका अनुवाद लिन किंग ने किया, विजेता घोषित हुई।
- 2025 में बानू मुश्ताक की हार्ट लैंप, जिसका अनुवाद दीपा भास्ती ने किया, विजेता रही। यह सम्मान प्राप्त करने वाली प्रथम कन्नड़ से अनूदित पुस्तक थी।

स्रोत: IE

असम में जलकुंभी आजीविका पहल

संदर्भ

- अंतर्राष्ट्रीय गैंडा फाउंडेशन द्वारा समर्थित एक आजीविका पहल ने असम के लाओखोवा-बुरहाचापोरी वन्यजीव अभयारण्य के आसपास रहने वाली महिलाओं को आक्रामक जलकुंभी को बाज़ार योग्य घरेलू उत्पादों में परिवर्तित करने में सक्षम बनाया है।

जलकुंभी

- **वैज्ञानिक नाम:** आइकोर्निया क्रैसिप्स
  - यह एक तीव्र गति से बढ़ने वाला जलीय पौधा है जो बीज और वनस्पति प्रजनन दोनों से फैलता है।
  - इसका मूल स्थान ब्राज़ील है, लेकिन यह भारत सहित विश्व के अन्य भागों में फैल चुका है।

चिंताएँ:

- जलकुंभी घने आवरण बनाकर जल निकायों को पूरी तरह ढक देती है।
- यह सूर्य प्रकाश को रोकती है और जल में ऑक्सीजन स्तर घटाती है, जिससे जल व्यावसायिक उपयोग के लिए अनुपयुक्त हो जाता है।
- इसे "बंगाल का आतंक" भी कहा जाता है।

- यह जल निकायों को मत्स्य पालन, परिवहन और मनोरंजन के लिए अनुपयुक्त बना देती है।

लाओखोवा-बुरहाचापोरी वन्यजीव अभयारण्य

- यह अभयारण्य असम में ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी तट पर लगभग 114.19 वर्ग किलोमीटर में फैला है।
- इसका प्रशासन असम के नगाँव और सोनितपुर ज़िलों के माध्यम से होता है।
- यह एक महत्वपूर्ण वन्यजीव गलियारे एवं काज़ीरंगा टाइगर रिज़र्व का आधिकारिक बफ़र ज़ोन है।
- यह पारिस्थितिकी तंत्र काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान (पूर्व) को ओरंग राष्ट्रीय उद्यान (पश्चिम) से जोड़ता है।
- **परिदृश्य विविधता:** इसमें आर्द्र जलोढ़ घासभूमि, नदी तटीय वन, आर्द्र पतझड़ी वन और दुर्लभ स्वच्छ जल के मैंग्रोव शामिल हैं।
- **प्रमुख प्रजातियाँ:** यह एक-सींग वाले गैंडे, रॉयल बंगाल टाइगर, एशियाई हाथी, जंगली जल भैंस और अत्यधिक संकटग्रस्त गंगा नदी डॉल्फ़िन के लिए आवश्यक आवास प्रदान करता है।

स्रोत: TH

संयुक्त राष्ट्र सैन्य लैंगिक प्रवक्ता पुरस्कार 2025

संदर्भ

- भारतीय सेना की अधिकारी मेजर अभिलाषा बराक को वर्ष 2025 के प्रतिष्ठित संयुक्त राष्ट्र सैन्य लैंगिक प्रवक्ता पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

परिचय

- वर्तमान में मेजर बराक लेबनान में संयुक्त राष्ट्र अंतरिम बल (UNIFIL) में भारतीय बटालियन के साथ सेवा दे रही हैं।
- वे भारतीय सेना की प्रथम महिला कॉम्बैट हेलीकॉप्टर पायलट भी हैं।
- इस सम्मान के साथ मेजर बराक तीसरी भारतीय शांति सैनिक बनीं जिन्हें यह पुरस्कार मिला है। इससे पहले मेजर सुमन गवानी (2019) और मेजर राधिका सेन (2023) को यह सम्मान प्राप्त हुआ था।

पुरस्कार के बारे में

- यह पुरस्कार 2016 में संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों के सैन्य मामलों के कार्यालय द्वारा स्थापित किया गया था।
- इसका उद्देश्य उन सैन्य शांति सैनिकों को सम्मानित करना है जिन्होंने लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 1325 (महिला, शांति एवं सुरक्षा) को लागू करने में असाधारण प्रतिबद्धता दिखाई है।

क्या आप जानते हैं?

- 1950 के दशक से भारत ने 50 से अधिक मिशनों में 2,90,000 से अधिक शांति सैनिक भेजे हैं, जिससे वह संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों का सबसे बड़ा योगदानकर्ता बना है।
- 1988 में संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिक बलों को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

स्रोत: AIR

डॉलर–रुपया स्वैप ऑक्शन

संदर्भ

- भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने तीन वर्षों की अवधि के लिए $5 बिलियन डॉलर–रुपया खरीद/बिक्री स्वैप नीलामी की घोषणा की है। इसका उद्देश्य तरलता की तंगी को कम करना और अमेरिकी डॉलर के मुकाबले कमजोर हुए रुपये को समर्थन देना है।

डॉलर–रुपया स्वैप ऑक्शन के बारे में

- यह RBI द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक तरलता प्रबंधन उपकरण है।

- इसके माध्यम से RBI बैंकिंग प्रणाली में दीर्घकालिक रुपये की तरलता डालता है, बिना स्थायी रूप से मुद्रा आपूर्ति बढ़ाए।
- यह तंत्र तरलता तनाव को कम करने, मुद्रा बाज़ार को स्थिर करने और अर्थव्यवस्था में ऋण उपलब्धता को सुधारने में सहायता करता है।

यह कैसे कार्य करता है?

- इस व्यवस्था में बैंक अमेरिकी डॉलर RBI को विक्रय हैं और बदले में रुपये प्राप्त करते हैं।
- दोनों पक्ष एक निश्चित अवधि के बाद पूर्व-निर्धारित विनिमय दर पर लेन-देन को उलटने पर सहमत होते हैं।
- इस मामले में बैंक तीन वर्षों बाद रुपये लौटाकर डॉलर पुनः खरीदेंगे।
- नीलामी बहु-मूल्य प्रणाली पर आधारित होती है, जहाँ सफल बोलीदाता अपनी व्यक्तिगत रूप से उद्धृत प्रीमियम का भुगतान करते हैं।

RBI ऐसे स्वैप क्यों करता है?

- इसका उद्देश्य वैश्विक अनिश्चितता, अस्थिर पूँजी प्रवाह और डॉलर की सुदृढ़ माँग से उत्पन्न तरलता की कमी को दूर करना है।
- यह रुपये को स्थिर करने, बैंक ऋण को समर्थन देने, मौद्रिक नीति के प्रसारण को सुदृढ़ करने और वित्तीय परिस्थितियों को व्यवस्थित बनाए रखने में सहायता करता है, बिना विदेशी मुद्रा भंडार को उल्लेखनीय रूप से घटाए।

स्रोत: TH

■■■